"यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥"

हिन्दी अनुवाद → हे पुरुषश्रेष्ठ! ~~जिस धीर~~

सुख तथा दुःख को एकसमान मानने वाले ~~पुरुष~~ जिस धीर पुरुष को शीतोष्णादि व्यथित नहीं करते, वह मोक्षप्राप्ति के योग्य होता है।

भावार्थ - वह पुरुष जो सुख की प्राप्ति में ~~ज~~ हर्ष से आह्लादित ~~होक~~ नहीं होता तथा दुःख की प्राप्ति में विषाद के ~~दुःख~~ शोक से पीड़ित नहीं होता। कहने का आशय यह है कि ~~व~~ ऐसा पुरुष ~~व~~ ~~दुःख~~ सुख-दुःख में एकसमान भाव को धारण करता है। इसीकारण वह धीर पुरुष पुरुषों में श्रेष्ठ ~~ह~~ है।

ऐसे पुरुष सर्वदा आत्मा के स्वरूप का साक्षात्कार करते हैं, इसलिए पुरुषर्षभ कहलाते हैं। सुख-दुःखादि परस्पर विरोधी पदार्थों को सहने के कारण ऐसा श्रेष्ठ पुरुष मोक्ष की प्राप्ति करने में समर्थ होता है।